

हिन्दी विभाग

देखो



लोकेश जैन

(संपादक) मैकानिकल (४/४)

कैसी अजीब हैं हमारी दोस्ती,
मिले थे जैसे दो अंजान और आज है एक दूसरे की शान,
हमारी दुनिया कुछ खास नहीं पर एक दूसरे के बिना
जान नहीं,
रहते हैं हमेशा साथ-साथ, ऐसी ही हम 'हम-दम'
कभी न बताते एक दूसरे के लिए लगाव,
पर हरकतें कर हैं सब बयाँ,
दोस्त, तुम रहना हमेशा मेरे साथ,
क्यूँ? तुम्हारे बिना जिन्दगी में रहेगी, न कोई बात,
हम हमेशा करीब रहेंगे और कभी दूर न होंगे।

रह जाती है सिफ़्र यादें जब खत्म हो जाते हैं रिश्तें
भूल जाते हैं साथ में बिताएँ पल
रह जाती है सिफ़्र नफरत की निशानियाँ
समय बीत जाता है, वक्त नहीं रुकता,
चहरे दुंधले हो जाते हैं, यादें रह जाती हैं
परछाईयाँ जैसे,
आँखों को गीला करने के लिए,
कुछ है अंदर जो फिर विश्वास करने से घबरता है,
भूलने नहीं देता,
बस, अपने आप को छिपा लेता है।

थोड़ा सा अभ्यास बहुत सारे उपदेशों से बेहतर है।

कोई मुझे जीना सिखा दो

सुशील शर्मा

(संपादक) प्रोडक्शन ४/४



चीख रही हैं ये दीवारें,
तस्वीरे भी काँप रही हैं,
अकेला मन बैठा तनहा है,
मुकदरे भी श्राप रही है।

खोए - खोए है हम,
खोई - खोई हमारी राहें,
मन में एक डर सा है
कही फिर ना मिल जाएं वो बाहें।

इन्साफ के तराजू में हमें मनत तोल गाए वो,
फिकर का नामो - निशा ना अब तक आया वहाँ से।

रफ्तार पकड़ रही है जिन्दगी अचानक,
डरता हूँ कही पीछे न छूट जाऊँ
समय मेरे आगे निकल रहा है,
डरता हूँ कही यूँ ही ना टूट जाऊँ।

धुआँ-धुआँ है सब कुछ यहाँ,
कोई मुझे आगे का रास्ता दिखा दो
बचपन से मर-मर के जी रहा है
कोई मुझे जीना सिखा दो।

हँसी मन की गांठें बड़ी आसानी से खोल देती हैं।



हिन्दी

शफीखुर रहमान

(उप-संपादक) ईसीई (३/४)

गंगा की निर्मलता हिन्दी,
यमुना की शीतलता हिन्दी,
उत्तर से दक्षिण तक फैली
कण-कण की कोमलता हिन्दी।

हिन्दी ने जोड़ा है सबको
हिन्दी सबकी आशा है
भारत माता के बेटे हैं,
हिन्दी सबकी भाषा है।

भारत की पावन संस्कृति की
यह हिन्दी की परिभाषा है
भारत माता के बेटे हैं
हिन्दी सबकी भाषा है।

भाषा के द्वेष मिटाकर
हर विरोध तोड़ेगी हिन्दी।
बोलचाल की भाषा बनकर
भारत को जोड़ेगी हिन्दी।

जन मानस के कंठ-कंठ में
राम कथा का वासा हुआ।
राम चरित को अमर किया
वह तुलसी की प्यारी हिन्दी।

सब भाषा के सुशोभित फूलों से,
इस जननी का श्रृंगार हुआ है।
शुभ्र ललाट की बन कर बिंदी,
चम-चम चमके प्यारी हिन्दी।

अहिंसा ही धर्म है, वही जिंदगी का एक रास्ता है।



मेहनत

प्रियांका

(उप-संपादक) बायोटैक्नॉलजी (२/४)

मेहनत है एक जादूगरनी
जादू की बस छड़ी घुमा दे।
निर असम्भव को भी यह,
पलभर में सम्भव कर दिखला दे।

मेहनत है संगिनी निराली
जो भी सच्चा साथ निभादे
समय देख कर यहा उसको
उन्नति की चोटी पर पहँचा दे।
मेहनत ही है सच्ची पूजा
संतों ने इसके गुण गारा
आओ, हम भी सच्चे मन से
मेहनत को अब गले लगाँए।

मैकेनिकल जिंदगी

अभिजीत पुर्कर, मैकेनिकल (१/५)

जहाँ चाह हैं, वहाँ राह है,
और जो चले, वही बादशाह है।

बचपन से ही भौतिक विज्ञान तथा हथियार शास्त्र में रुचि होने के कारण, मैकेनिकल इन्जीनियरिंग मेरे लिए अनुकूल था। शुरूआत में माँ, दोस्तों तथा बड़ों के द्वारा इसका विरोध हुआ। हाँलाकि कंप्यूटर्स में बर्टी होने की शोक थी, फिर भी नहीं हुआ। क्यों होता? जब प्यार और कौशल मैकेनिकल के प्रति हैं, तो शादी कम्प्यूटर्स से क्यों? वह भविष्य की बात करते, फिर बड़े पैकेजिस की तो कभी अमेरिका में बड़े बंरल में बसने की। परंतु अपने निश्चय पर दृढ़, मैंने अपने दिल की ही सुनी।

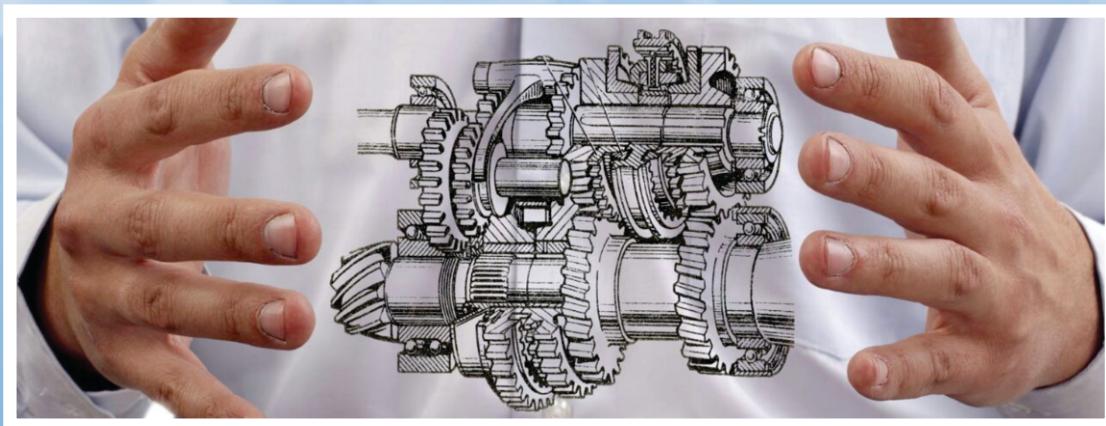
तो इस जुनून के साथ शुरूआत हुई मेरी कॉलेज की। मेरा यह संदेश सभी छात्रों के प्रति है। कोई भी ब्रांच अपनी रुचि देखकर लें, नहीं तो कॉलेज के चार साल बस कैन्टीन में कॉटने का दिल होगा।

मैकेनिकल ब्रांच सिबिएटी की सबसे प्राचीन और अनुभवी शाखा है। पूरे शहर में मशहूर, हर साल कई हीरे निकलते हैं इस शाखा के। सबसे अधिक पिएचडी प्राप्त्यापको से लैस, नवीनतम उपकरागों से भरपूर यह किसी भी छात्र में उत्साह जगाने की क्षमता रखता है।

इन प्राध्यापकों की मार्गदर्शन में यहाँ के छात्रों ने कई रिसर्च पेपर्स पब्लिश किए हैं।

प्राध्यापकों की लगन, अनुशासन और प्रेम भाव युक्त शित्रा प्रदान करने की प्रणालिका से इस कॉलेज ने आज एक गुरुकुल का दर्जा प्राप्त किया है। फार्मुला रेसिंग क्लब और रोबोटिक्स क्लब जैसे उपकरमों से हर युवा छात्र में स्पूर्ति का संचार होता है कुछ कर दिखाने का।

यहाँ के छात्र अपना दाईत्य मानते हुए वह हर कार्य करते हैं जो इस कॉलेज के नाम को चार चाँद लगा दे। तो आईये हम सब अपनी क्षमता से आगे बढ़ इस कॉलेज का नाम रौशन करें।



क्रोध को जीतने में मौन सबसे अधिक सहायक है।



नई किरण

वर्तिका
ईसीई १/४

हम प्रभात की नई किरण है
हम दिन के आलोक नवल हैं
हम नवीन भारत के सैनिक
धीर वीर गंभीर अचल हैं।

हम राणा प्रताप के देश के निवासी हैं
रोटियाँ भले दो कम खाएँगे
मगर किसी जुर्म के आगे
मस्तक न झुकाएँगे।
वीर प्रभु की आँखों के
हम नवीन उजाले हैं
गंगा जमुना हिंद महासागर के
हम रखवाले हैं।

हम प्रहरी ऊँची मिहाद्री के
सुयमि स्वर की लेते हैं
हम हैं शांति दूत धर्मों के
छाव सभी को देते हैं
हम प्रभात की नई किरण हैं
खुद को भारतवासी कहते हैं।

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

के. दिव्य तेजा
कोई जाति नहीं कोई पीड़ा नहीं ईसीई २/४
सब आते यही मनुष्य बनकर
कोई अमीर नहीं कोई गरीब नहीं
सब को मरना है इसी घरती पर
कोई हिन्दू नहीं कोई मुसलमान नहीं
सबका हाथ जाता है ऊपर
कोई काला नहीं कोई गोरा नहीं
सबकी निगाह जाना है दिल पर
कोई छोटा नहीं कोई बड़ा नहीं
सब को है अपनी जिन्दगी से प्यार
हम बने रहे ऐसे ही
एक ही परिवार का हिस्सा बनकर

नोट

शिकारी राहुल
प्रोडक्शन ४/४

सबसे चालू है ये नोट
सबको चलाता है ये नोट
किसी का राज़ बनती है ये नोट
तो किसी का खुलासा करती है ये नोट
दूर दूर तक जाती है ये नोट
आपस की दूरियाँ बढ़ाती है ये नोट
अच्छे अच्छों की आवाज़ दबाती है ये नोट
इनसान का स्थान बदलती है ये नोट
सब की सेवा करती है ये नोट
कोई अन्दाज़ नहीं जिन्दगी का, बिना एक नोट

ना खोजो ना बचो, जो आता है ले लो।



ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

एक प्रेरणा का रत्नोत्तम

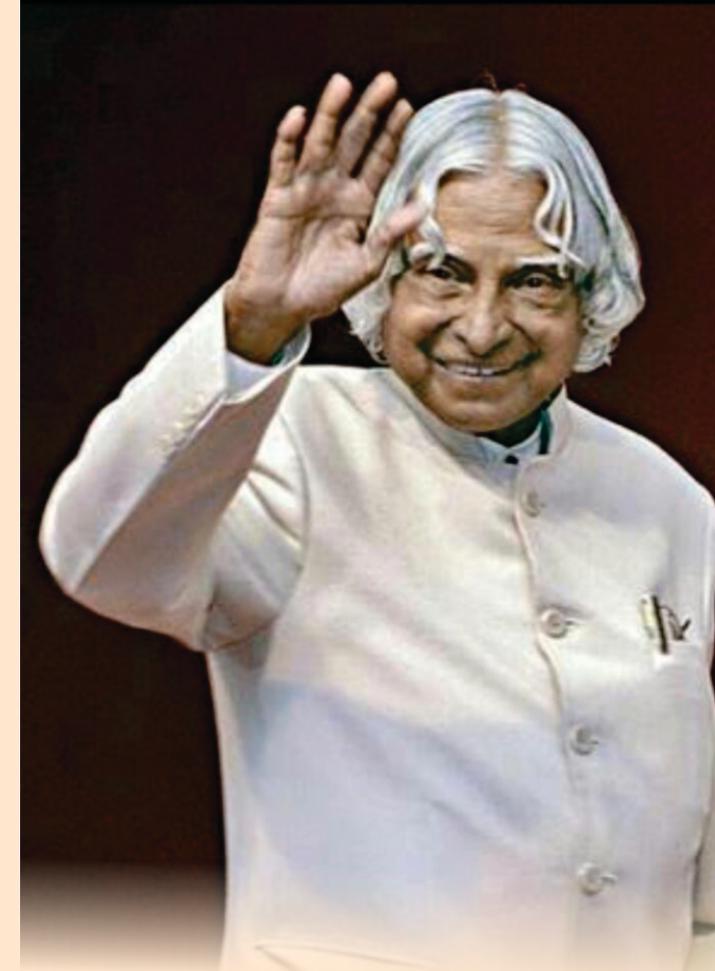
हेमंत वर्मा, ईसीई (३/४)

भारत के सबसे जाने माने राष्ट्र पतियों में से थे अब्दुल कलाम। उनका जीवन हर एक इंसान को देशभक्ति करुणा, महनत और लगन की प्रामुख्यता का एक ज़रूरी पाठ सिखाता है।

वह एक काफी साधारण परिवार से थे। उनका परिवार ज्यादा पैसों के विषय में अमीर न सही परन्तु अपने दान के गुण के लिए जाना जाता था। उनके माँ, बाप हर हफ्ते लोगों को भोजन बिना उनके रंग, मजहब और औदा को देखकर करवाते थे। अब्दुल कलाम अपने माँ बाप से काफी प्रेम करते थे।

उनका पहला उद्देश्य एक पायलेट बनने का था। परन्तु वे उस में उत्तीर्ण न हो पाये। किसमत को कुछ और ही मंजूर था। उन्होंने हार न मान कर इस्त्रों में अपने प्रवेश के लिए प्रयत्न किया और उन्हें यहाँ एक नौकरी मिल गई। उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। अग्नि, पृथ्वी आदि मिसायले सब उनके और उन जैसे अनेक दूरदर्शी वैज्ञानिकों की देन है।

अब्दुल कलाम को छात्रों से बहुत प्रेम था। वो छात्रों को ज्ञान प्रसारित करने में कभी नहीं बल्कि चूके उन्होंने अपनी आखरी



स्वास भी यहा कार्य करते हुए ली। उन्हे कभी भी उनके उप्लब्धियों का घमंड नहीं था और उन्होंने अपना पूरा जीवन काफी सादगी से बिता दिया। उन्होंने हमेशा हमेशा भारत के उन्नति के लिए ही प्रयत्न और निरंतर श्रम किया। इस लिए यह देश उन्हे इतने प्यार और इज्जत से सराहता है।

अगर भारत के कुछ और युवक उन्हीं के भाति इस देश के लिए प्रयत्न करे तो यह देश एक अत्यंत प्रगतिमान, सुकृशल और समृद्ध देश बन सकता है।



चुनौतियों से हारा हुआ फिर से जीतेगा, परंतु मन से हारा हुआ जिंदगी हार जाएगा।

जाने क्यों

अभिजीत पुर्कर

(उप-संपादक) मैकानिकल (१/४)

बिन सागर की गहराई जाने
किनारा चाहते हैं?
जाने क्यों लोग सहारा चाहते हैं?
जो खुली आँखों को न दिखे
मूँद कर पलकें वो नज़ारा चाहते हैं
किसी और के कंधे से लगाना
अपनी सफलता का निशाना चाहते हैं
जाने क्यों लोग सहारा चाहते हैं?
खुद ऊँचा उठने की नहीं सोचते
बस दूसरों को नीचे गिराना चाहते हैं
जाने क्यों लोग सहारा चाहते हैं?



नसीम फातिमा
बयोटैक्नॉलजी (२/४)

भूल

वर्तिका

ईसीई (१/४)

जो कभी न करे भूल,
उसे भगवान् कहते हैं।
जो भूल करे
उसे इन्सान कहते हैं।
जो भूल करे और भूल जाए
उसे नादान कहते हैं।
जो भूल पर भूल करे
उसे आसावधान कहते हैं।
जो भूल कर मुरझाए
उसे शैतान कहते हैं।
जो भूल कर भूल से सीखे
उसे बुद्धिमान कहते हैं।

भारतीय महिलाएँ

१. भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री - श्रीमती इंदिरागांधी
२. भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री - श्रीमती सुचिता कृपलानी
३. भारत की प्रथम महिला राजदूत - विजयलक्ष्मी पंडित
४. भारत की प्रथम महिला न्यायाधीश - जस्टिस अन्नाचंडी
५. भारत की प्रथम महिला मुख्य न्यायाधीश - जस्टिस लीला सेट
६. भारत की प्रथम महिला एड्झेकेट - कोरनेलिया मोरानजी
७. भारत की प्रथम महिला आई.पी.एस - किरण बेदी
८. भारत की प्रथम महिला आरोहक - बजेंद्रीपोल

सर सलामत तो पगाड़ी हज़ार।

वो फुटपाथ पे मौत

जिंदा है उम्मीद पर, वो जो फुटपाथ पे है सोया,
पाल रहा है मुसीबतें, ना जाने किसने था बोया
किस्मत पर अपने, बेचारा खूब है रोया,
गरीबी में उसने, बहुत कुछ है खोया।

छोड़ आया है परिवार गाँव में,
भूखे प्यासे, मरते होंगे,
सोच यहाँ डूबा रहता है,
रात-रात वो डरते होंगे।

बस एक दिन गाडी आती है,
उम्मीदों को कुचल जाती है,
सपनों में मर ही जाता है,
लौटकर वो घर नहीं आता है।

रोते हैं घरवाले सारे
पुलिस को बस पैसे प्यारे
वकील आते, कहते नोट दो,
नेता आते कहते, 'इन्साफ मिलेगा, पहले नोट दो'।

विधवा बच्चों संग बैठी है
घर में ना पैसे, ना रोटी है,
वो घर भी दुनिया वालों से देखा नहीं जाता
और किस्मत धीरे-धीरे सब कुछ है खा जाता।

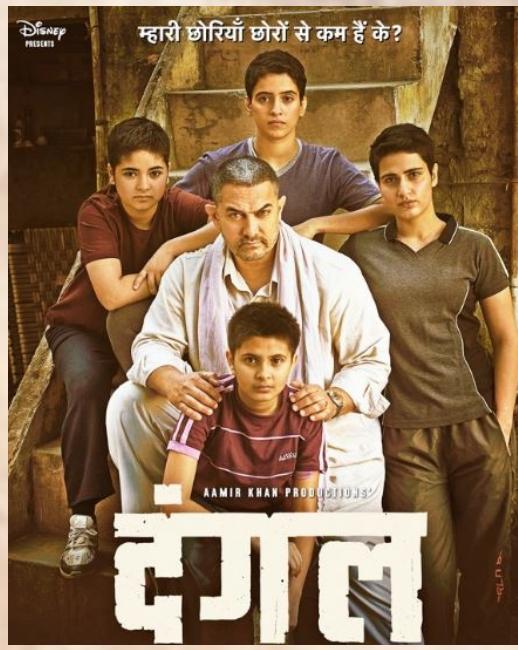
उस पानी में गई भैस जैसा हो जाता है इन्साफ,
और वो गरीब भी क्या करे, कर देता है गाड़ी वाले को माफ,
उस गरीब को वो घड़ी एक निशानी बनकर रह जाती है,
और वो फुटपाथ पे मौत, बस एत
कहानी बनकर रह जाती है।

अमृत वचन

पीने के लिए कोई चीज़ है तो - क्रोध
खाने के लिए कोई चीज़ है तो - गम
लेने के लिए कोई चीज़ है तो - ज्ञान
देने के लिए कोई चीज़ है तो - दान
कहने के लिए कोई चीज़ है तो - सत्य
दिखाने के लिए कोई चीज़ है तो - दया
छोड़ने के लिए कोई चीज़ है तो - अहंकार
जीतने के लिए कोई चीज़ है तो - मन

भावना, ईसीई (१/४)

भरोसा कीमती होता है धोखा उतना ही महंगा हो जाता है।



मूवी रिव्यू

शफीखुर रेहमान
ईसीई (3/4)

यह फिल्म हरियाणा के पास छोटे से गाँव 'बेलाली' में रहने वाले 'महावीर सिंह फोगाट' साहब की सच्ची कहानी पे आधारित है। महावीर साहब ने अपनी बेटियों को लड़कों के साथ क्रुश्ती लड़ाने का सोचा था जिसके लिए हम उनको सेल्यूट करते हैं। इसकी वजह से उन्हें लोगों की कई बातें, गालियाँ सुनानी पड़ी। लेकिन कहते हैं न कि जीतते वो नहीं हैं जो बहते पानी के साथ रह जाते हैं। जीतने वो हैं जो पानी की धार को चीरते हुए आगे बढ़ते हैं।

कहानी कुछ इस प्रकार है कि पहलवान (आमिर खान - महावीर सिंह फोगाट) है जो अपने देश के लिए स्वर्ण पदक जीतना चाहता या और वो जीत नहीं सका। स्वर्ण पदक तो इस पहलवान को एक बेटे कि ज़रूरत थी जो उसके सपने को पूरा कर सके। लेकिन उसको बेटा नहीं होता सिर्फ चार बेटियाँ होती हैं।

और फिर एक दिन उस पहलवान की समझ में आता है कि स्वर्ण पदक लड़की भी जीत सकती हैं लड़का ही क्यों? और फिर वो अपनी बेटियों को पहलवाल बनाता है। और एक दिन वो बेटी उस पहलवान के लिए स्वर्ण पदक जीत के लाती है और सावित कर देती है कि लड़कियाँ भी माँ बाप का सपना पूरा कर सकती हैं।

इससे पता मालूम होता है कि लड़कियों को भी उतनी ही ज़रूरत है जितने लड़कों कि। यह कहानी बहुत ही खूबसूरत और प्रेरणादायक है, इस कहानी को देखकर लाखों लड़कियाँ और लाखों परिवार प्रेरित होंगे।

दंगल एक आर्ट जैसी फिल्म है और ऐसी फिल्म जो आपको बहुत कुछ सिखाती है।

आमिर खान ने एक ऐसी फिल्म बनाई जो दुनिया को दर्शाती है कि जब घर में बेटा होता है तो ही मिठाई नहीं बाँटनी चाहिए, जब बेटी होती है तो भी बैंड बजाना चाहिए क्योंकि बेटा और बेटी दोनों ही बराबर हैं।

कुल मिलाकर दंगल एक बहुत ही अच्छी फिल्म है, एक दम साफ-सूथरी परिवार फिल्म है। तो आप भी इस फिल्म को एक बार तो ज़रूर देखिएगा।

अहंकार में तीन गए, धन, वैभव और वंश। ना मानो तो देख लो; रावन, कौरव और कंस।

महल सपनों का

निखिल राजवानी

प्रोडक्शन (४/४)

दूँढ़ रहा, फिरता गलियों में,
फिर खोए सपनों का डेरा,
जहाँ सुनहरी कविताएँ हो,
वही महल सपनों का मेरा।

दूँढ़ रहा जहाँ बागबान है,
खिलते फूलों का चेहरा,
जहाँ बरसती किरणें सारी
वही महल सपनों का मेरा।

दूँढ़ रहा जहाँ आसमान में,
टिमठिम तारों का सेहरा
जहाँ मखमली आसमान हो,
वही महल सपनों का मेरा।

दूँढ़ रहे अंधेरे मुझको,
मैं दूँढ़ पदचिन्ह तेरा
जहाँ टहलते मुझ जैसे है
वही महल सपनों का मेरा।

चित्रकार

सृष्टि आंभोरकर
केमिकल (४/४)

इक कोरे कागज पर वो एक तस्वीर बनाने बैठा,
फिर अपनी कलाकारी पर था वो ऐंठा,
कुछ गलतियों पर उसको दुःख तो था,
पर वो किससे अपनी कहानी कहता ?

बारी आई रंग चढ़ाने की,
तो कुछ जाने-पहचाने से रंग लिए उसने
अपने नाजुक हाथों से ब्रश फेरता
थोड़े और रंग संग लिए उसने।

एक रंग सबसे ज्यादा था फिरा
पर वो चित्रकार उसे मिटा भी ना पाया मिटाने से
खैर ! वो दिखाना भी जरूरी था,
वो रंग छिपता नहीं, ना दिखाने से।

उस चित्रकार को वो रंग ज्यादा प्यारा ना था,
पर उसी रंग ने उसे बनाया था धनवान
वो 'गरीबी' का रंग था,
और वो चित्रकार था खुद भगवान।
तस्वीर बनके तैयार हुई
उसको फिर अपने रंग चुनने पर थोड़ा दुःख हुआ था,
आबादी बढ़ाता, गरीबी फैलाता
एट और गरीब पैदा हुआ था।



मेटी माँ

और उलझे हुई हर पल को
सुलझाती है।

वो जो मुझे मनाती है
और मेरी हर बात मानती है।

वो जो खुद को भूल जाती है
और मेरी हर एक भूल का हल
निकालती है।

वो जो मेरा होसला बढ़ाती है
और मेरे हर फैसले में साथ
खड़ी होती है।

वो जो मेरी तरफदारी करती है
और हर एक तारीफ की
हकदार है।

वो है मेरी माँ
मेरी जिन्दगी का अरमा।

ए. दिव्य तेजा

(उप-संपादक) ईसीई (२/५)

सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं।



बचपन

साक्षी गुप्ता

सी एस ई (१/४)

बचपन की यादें भूली नहीं जाती,
बचपन को याद कर आँखे भर आती है।
जो बचपन में बड़े होने की जल्दी थी,
अब यह भड़ती उमर उन हसीन
दिनों को भुला नहीं पाती।

बचपन को याद करने की कोई वजह नहीं होती
बचपन तो एक तौफा है जिसकी कीमत कभी चुकाई नहीं जाती।

दिल चाहता है

एम. निखिल
ई सी ई (२/४)

कभी कभी दिल चाहता है कि कुछ ऐसा हो जाए,

क्लास हो पर टीवर न आए

परीक्षा हो पर परिणाम न आए,

बस में बैटे पर कॉलेज न आए,

हफ्ते में तीन दिन फिर रविवार आ जाए,

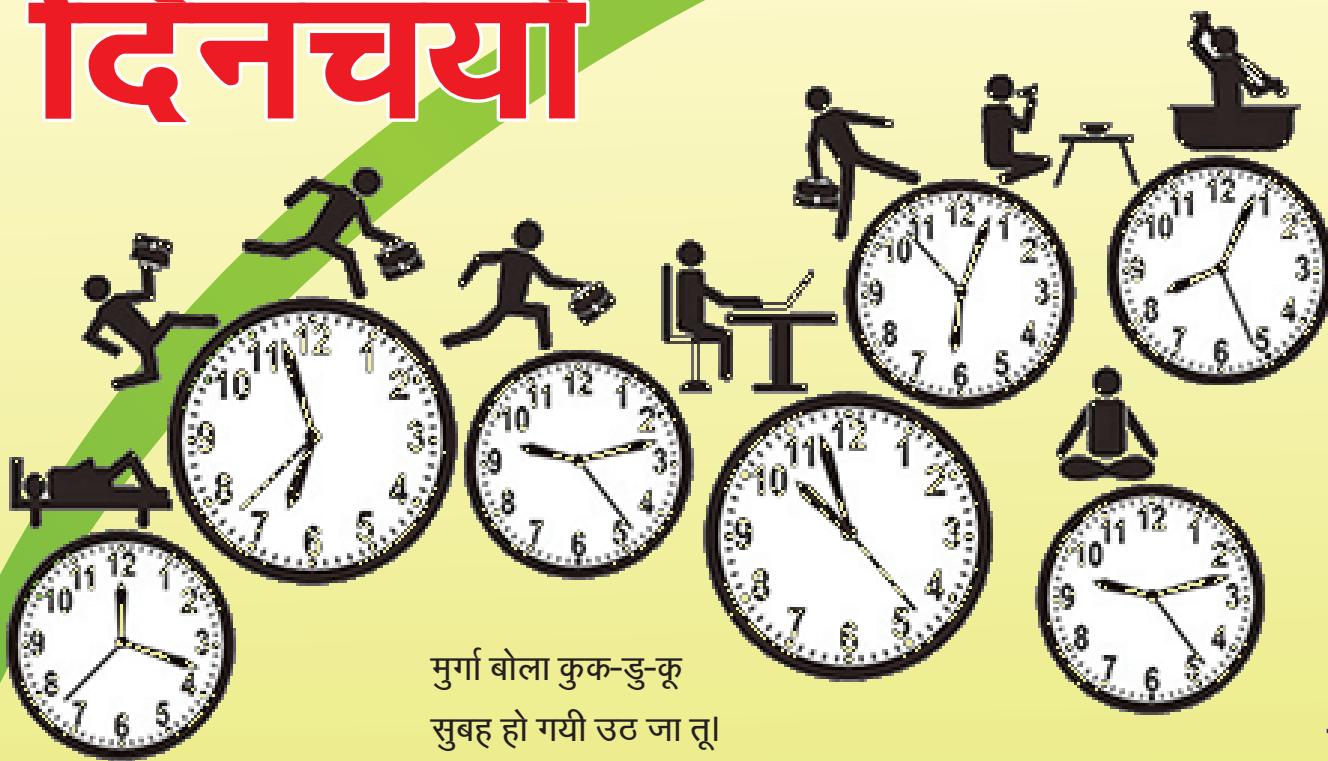
चाहते हो जिसे दिल से वो अपना हो जाए

सारी जिन्दगी बस यूही कट जाए

काश ये सपना सच हो जाए।

पैर में मोच और छोटी सोच इंसान को कभी आगे बढ़ने नहीं देती।

दिनचर्या



मुर्गा बोला कुक-डु-कू
सुबह हो गयी उठ जा तू।
घड़ी की घंटी टिक टिक टिक
समय पर उठना ही हल ठीक।

माँ बोली अरे अरे अरे
जल्दी से सब काम कर ले।
कोयल बोली कूह-कू-कू
अब तो बाहर आ जा तू।

बस की घंटी पें पें पें
जल्दी से चढ़ जा इसमें।
कॉलेज की घंटी टन, टन, टन
पढ़ते पढ़ते थक गया मन।

छुट्टी की घंटी बज गई टन
खेल खेल कर थक गया तन
फिर बिस्तर बोला सोने आओ
काम की थकावट दूर भगाओ।

किरण

ई सी ई (१/४)

हीरे को परखना है तो अंधेरे का इंतजार करों धूप में तो काँच के टुकड़े भी चमकने लगते हैं।

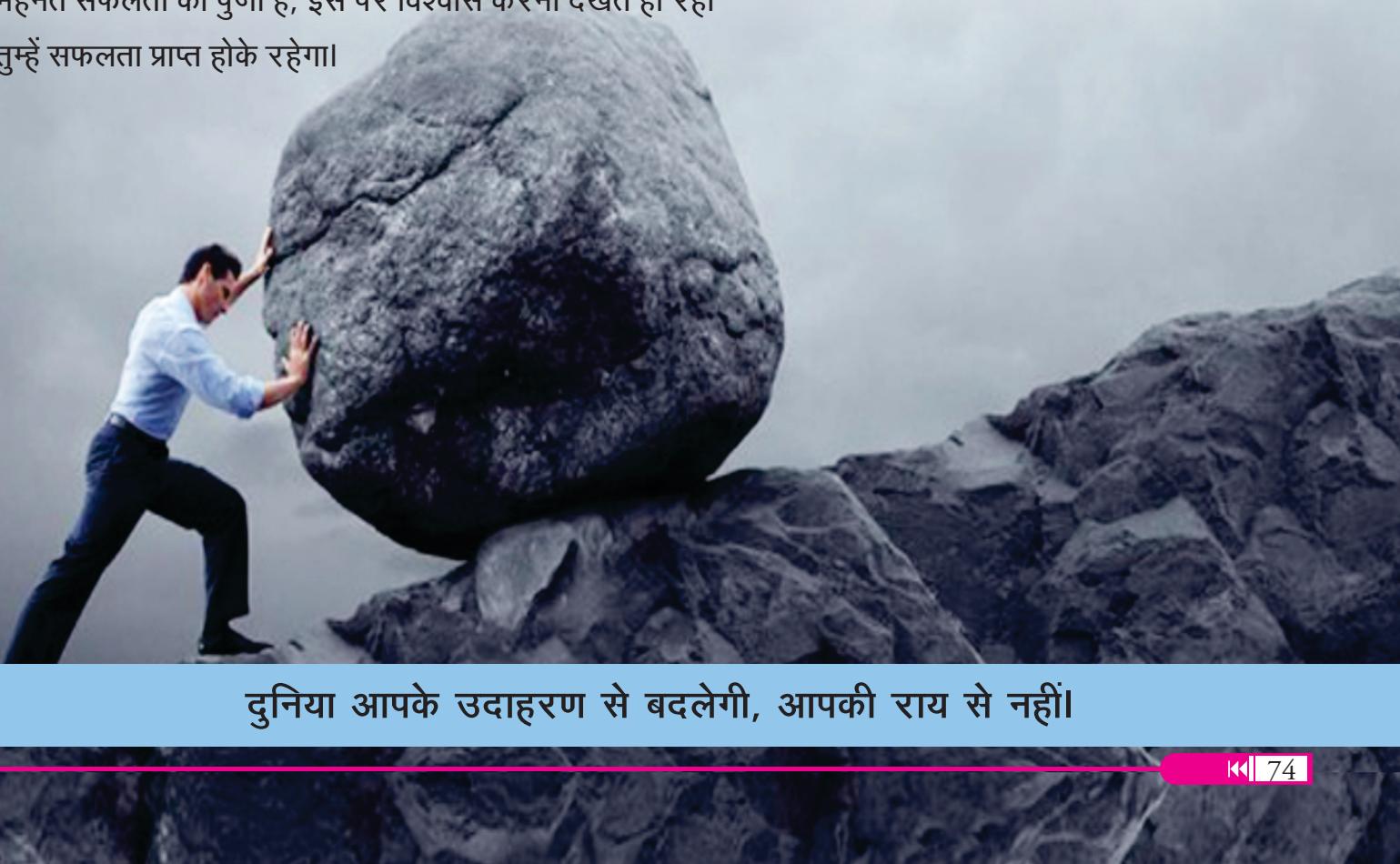
जीवन एक संघर्ष

जीवन एक संघर्ष है, उससे लड़ना होगा
इस कठीन पथ को आसान बनाना होगा
लक्ष्य पाने के लिए दृढ़ संकल्प रखना होगा
जीवन के इस रहस्य को सही परखना होगा

अपनी हर खूबी को बखूबी सींचना होगा
अपनी हर खासी को दूर भगाना होगा
चंचल मन को जीत का एहसास दिलाना होगा
असंभव को संभव में परिवर्तित करना होगा

कितनी भी ठोकर तुम खालो, डटकर आगे बढ़ना होगा
छल-कपट युक्त जंग से तुम्हें सावधान / सतर्क रहना होगा
हर पर हर शण पूर्ण रूप से जागृक रहना होगा
विविध रूप में चुनौतियों को मुह तोड़ जवाब देना होगा
जितनी भी निराशा तुम पाओ, हर हाल में आगे बढ़ना होगा,
मेहनत सफलता की पुँजी है, इस पर विश्वास करना देखते ही रहों
तुम्हें सफलता प्राप्त होके रहेगा।

के. एल. सर्वानी
ई सी ई (१/४)



दुनिया आपके उदाहरण से बदलेगी, आपकी राय से नहीं।

कुछ कर सको तो

भावना

मैकानिकल (४/४)

उदा सको तो अन्न उगाओ,

घृणा उगाना मत सीखो।

जगा सको तो शान्ति जगाओ,

युद्ध जगाना मत सीखो।

बहा सको तो प्रेम बहाओ,

रक्त बहाना मत सीखो।

बता सको तो सुमार्ग बताओ,

कुमार्ग बताना मत सीखो।

कर सको तो भलाई करो,

बुराई करना मत सीखो।

सुना सको तो गीत सुनाओ,

रुदन सुनाना मत सीखो।

जगा सको तो अहिंसा जगाओ,

हिंसा जगाना मत सीखो।

बोल सको तो सत्य ही बोलो,

असत्य बोलना मत सीखो।

घटा सको तो पाप घटाओ,

प्रीत घटाना मत सीखो।

जला सको तो दीप जलाओ,

हृदय जलाना मत सीखो।

पिला सको तो अमृत पिलाओ,

विष पिलाना मत सीखो।

रह सको तो बाल-विकास मे रहो,

बुरी संगत मे रहना मत सीखो।

क्रोध मूर्खता से शुरू होता है और पछतावे पर खत्म होता है।



पहेलियाँ

प्रियांका
(उप-संपादक)
बयोटैकनॉलजी - २/४

१. सबसे लंबे पान का नाम क्या है?
२. वह कौन सी चीज है जो अपने से दूसरे अधीक इस्तेमाल करते हैं।
३. ३२ सैनिकों के बीच में मैं हूँ।
जितनी भी कोशिश करूँ मैं बाहर नहीं आ सकती, मैं कौन हूँ।
४. पहाड़ है, पर पथर नहीं, नदी है पर जल नहीं,
शहर है पर जीव नहीं, जंगल है पर पेढ़ नहीं।
५. तीन मूँह की तितली, तेल में नहाकर निकली।
६. हरा है पेढ़ नहीं, पालतू है पर कुत्ता नहीं।
नकल करता है, पर बन्दर नहीं।

५. ﻃﺎر، ﻃﺎر، ﻃﺎر
६. ﻃﺎط، ﻃﺎط، ﻃﺎط، ८. ﻃﺎط

त्रिपुरा

कार्य ही सफलता की बुनियाद है।

शायरी

मुबीन फातिमा
बयोटेक (२/४)

न किसी का फेका दुमा मिले,
न किसी से छिना हुआ मिले,
मुझे बस मेरे नसीब में लिखा हुआ मिले,
ना मिला ये भी तो कोई गम नहीं,
मुझे बस मेरी मेहनत का किया हुआ मिले।

छूले आसमाँ जमीं की तलाश ना कर,
जी ले जिंदगी खुशी की तलाश ना कर,
तकदीर बदल जायेगी खुद ही मेरे दोस्त,
मुस्कुराना सीख ले वजह की तलाश ना कर।

संघर्ष में आदमी अकेला होता है,
सफलता में दुनिया उसके साथ होती है,
जिस-जिस पर ये जग हँसा है,
उसीने इतिहास रचा है...।

फर्क होता है अमीर और फ़कीर में
फर्क होता है किस्मत और लकीर में
अगर कुछ चाहो और न मिले तो समझ लेना
कि कुछ अच्छा लिखा है तकदीर में...।

सफलता में दोषों को मिटाने की अनोखी शक्ति है।

चुटकुले



साई विष्णु
ई सी ई (३/४)

- अध्यापक : मुझे बड़ी खुशी हुई कि तुम परीक्षा में प्रथम आए। आशा है कि आगे भी इस प्रकार के नम्बर लाते रहेगे।
- छात्रा : एक शर्त पर।
- अध्यापक : कौन-सी?
- छात्र : अगली परीक्षा के प्रश्न-पत्र भी मेरे पिताजी के प्रेस में छपवाएँगे।

★ ★ ★

- एक आदमी दूसरे आदमी से कहा : “यार, बारिश में बिजली क्यों चमकती है?”
- दूसरे आदमी ने उत्तर दिया : “तुझे इतना भी नहीं पता कि भगवान् टार्च जलाकर देखते हैं, कहीं सूखा तो नहीं रह गया है।”

★ ★ ★

एक सरदार तालाब में गिर गया।
झूबते झूबते हाथ में मछली आ गई।
सरदार ने उसे पकड़ कर बाहर फेका और बोला
“कम से कम तू तो अपनी जान बचा ले॥

★ ★ ★

सरदार : जानू! जल्दी पीले, काँफी ठंडी हो जायेगी।

सरदारनी : तो क्या हुआ। जल्दी क्या है?

सरदार : नहीं देखा। लो ये देखो!

MENU

1. Hot Coffee - 15/-
2. Cold Coffee - 45/-

गलती करना मानवीय हैं, क्षमा करना ईश्वरीय।

ਪਹੇਲੀ

ਸਾਰੀ ਵਿ਷ਣੁ
ਈ ਸੀ ਈ (੩/੪)

ਤ	ਮ	ਥਾ	ਰਿ	ਥਿ	ਲੋ	ਕਾ	ਨਿ
ਨ	ਝ	ਕ	ਓ	ਤੇ	ਰੀ	ਬਿ	ਲ
ਜ	ਰਾ	ਰ	ਦਂ	ਨੇ	ਥ	ਲ	ਕ
ਲ	ਦਾ	ਹ	ਗ	ਲ	ਭ	ਗਾ	ਬ
ਮੈ	ਗੁ	ਬ	ਲ	ਵ	ਸ਼ੁ	ਦਾ	ਦ
ਸੁ	ਮ	ਨ	ਕਾ	ਫਿ	ਲੁ	ਵ	ਲਾ
ਕਾਁ	ਰਿ	ਵਾ	ਟ	ਤੂ	ਕ੍ਰ	ਨਿ	ਪੁ
ਕੁ	ਜੁ	ਗ	ਨੀ	ਰ	ਯਾ	ਪੁ	ਰ

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ੦੬ ਪ੍ਰਾਨੂੰ ੯ ਅਖੂਫ ੮ ਪ੍ਰਾਨੂੰ ੧੦ ਪ੍ਰਾਨੂੰ ੩
 ਅਖੂਫ ੧੧ ੬ ਪ੍ਰਾਨੂੰ ੮ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ੬ ਪ੍ਰਾਨੂੰ ੮ ਪ੍ਰਾਨੂੰ ੬

: ਅੰਮ੍ਰਿਤ

ਉਡਨੇ ਮੌਂ ਬੁਰਾਈ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਆਪ ਭੀ ਉਡੋ, ਲੇਕਿਨ ਉਤਨਾ ਹੀ ਜਹਾਂ ਸੇ ਜਮੀਨ ਸਾਫ਼ ਦਿਖਾਈ ਦੇਤੀ ਹੈ।